श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति सा विद्या या विमुक्तये सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त-/2022
गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना :-१. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नही है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

२०

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -

१. .... नाम के आरे में युगलिक धर्म होता नहीं ।
२. आत्म कल्याण के इच्छुक सब के जीवन में .... नियमित होना चाहिये ।
३. जो कार्य जिस काल में करने से लाभ की बजाय नुकसान हो वह अयोग्य काल .... कहलाता है ।
४. पुद्गलास्तिकाय .... और गलन स्वभाववाला है ।
५. प्रभु की मुकुट आदि आभूषण चढाते समय .... का चिंतन करना ।
६. जिसे अपना जीवन उत्तम गुणों से महकाना है उन्हें .... का गुण अपनाना ही पडेगा ।
७. मित्र के साथ .... करने से वर्तमान में फायदा होगा पर अंततोगत्वा हानि ही है ।
८. संसारी जीवों का जीवन .... की सहायता के बिना अधुरा है ।
९. श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु को महावदि छठ को .... में केवलज्ञान प्राप्त हुआ ।
१०. सुन्दर खूबसूरत बंगला बरसों बाद खंडहर बन जाता है इसमें भी .... का स्वभाव काम करता है ।
११. जिनपूजा में द्रव्य .... से उपार्जन किया हुआ ही वापरना ।
१२. विवेकहीन जीवन .... समान बन जाता है ।
१३. सुलस ने बाप दादा से चलता आया .... का धंधा छोड़ दिया ।
१४. श्लोक तथा काव्यों का अर्थ कहना वो .... वर्ण त्रिक हैं ।
१५. धर्म जीव को स्वार्थ से .... की ओर ले जाता है ।
१६. प्रभु .... को सिंहसेन आदि पिचानवे गणधर थे ।
१७. तीन बार की जाने वाली आराधना .... कहलाती है ।
१८. स्वयं के योग्य पर्याप्ति पूर्ण न करे वह जीव .... कहलाता है ।
१९. श्री सुमतिनाथ प्रभु पहले के तीसरे भव में जंबुमहाविदेह में .... राजपुत्र थे ।
२०. जैन शास्त्रो के पास भी काल की गिनती की स्वयं की .... और स्पष्ट पद्धति है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. स्थिर मन से पूजा करना वह कौन सी शुद्धि है ?
२. खारा पानी पीकर मीठा जल कौन बरसाता है ?
३. कौनसे प्रभु के शासन रक्षक यक्ष कुसुम यक्ष हैं ?
४. स्कंध के साथ जुडा हुआ स्कंध का छोटे से छोटा अविभाज्य सूक्ष्म अणु क्या कहलाता है ?
५. किसके प्रभाव से जीवन में दोष दूर होते हैं ?
६. "जय वियराय" सूत्र किस मुद्रा में बोला जाता है ?
७. अन्य दर्शन प्रकाश के अभाव को क्या कहते है ?
८. संघ भक्ति कर तीर्थंकर नामकर्म किसने बाँधा ?
९. विशेष रुप से जानना और विवेकपूर्ण बर्ताव करना उसे क्या कहते है ।
१०. कौनसे आरे में तीन तीन दिन के अंतर पर भूख लगती है ?
११. प्रभु के आगे धूप दीप करना वह कौन सी पूजा है ?
१२. समाजप्रिय प्राणी कौन है ?
१३. भूत, भविष्य, वर्तमान काल क्या कहलाता है ?
१४. हमें स्थिर रहने में कौन सहायक बनता है ?
१५. गुलाब के पास कोमलता है तो काँटो के पास क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. छल्लि २) अवगाणे ३) मणे ४) पभा ५) गूढ ६) कालो ७) अदिस्सा ८) पज्जति ९) सत्सङ्घि १०) दीहा ११) पलिया
१२. पअेसा १३) मूलग १४) फासा १५) चेव १६) सयललोअे १७) हुंति १८) खंधा १९) सद्द २०) नह

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) सद्गति के द्वार	१) प्रत्येक वनस्पतिकाय	६) बीज-पत्ते	६) गुरु भगवंतो
२) परस्त्रीगमन	२) प्रदेशों का समूह	७) चंडकौशिक	७) मिश्र शब्द
३) शंखनाद	३) महाव्यसन	८) सुव्रत	८) प्रणाम
४) त्रिक	४) आठवाँ देवलोक	९) अस्तिकाय	९) साध्वी
५) दूसरा आरा	५) गणधर	१०) सोमा	१०) बोर प्रमाण भोजन

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री संभवनाथ प्रभु की ऊँचाई कितने धनुष थी ?
२. एक लव बराबर कितने स्तोक ?
३. कुल मिलकर स्थावर के भेद कितने ?
४. अभिगम कितने हैं ?
५. अनंतकाय की संख्या लिखो ?
६. छठवें आरे में मनुष्य का उत्कृष्ट आयु कितना होगा ?
७. श्री अजितनाथ प्रभु कितने मुनिवरों के साथ मोक्ष में गये ?
८. एकेन्द्रिय की पर्याप्ति कितनी ?
९. शलाकापुरुष कितने है ?
१०. एक मुहुर्त बराबर कितने श्वासोश्वास ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. श्री पद्मप्रभस्वामी चैत्र सुदि पूनम को केवलज्ञान पाये ।
२. छः मास याने एक उत्तरायण और एक दक्षिणायन ।
३. आलू, कांदा, बीट में रेशे (तंतु) होते हैं ।
४. मंदिरजी में से काजा, कचरा दूर करने के पश्चात ही सभी क्रियायें करना ।
५. कपि लंछन श्री सुमतिनाथ प्रभु का है ।
६. रोहिणी चोर को साधु बनाने वाला सत्संग था ।
७. वृक्ष भयंकर ताप में भी सभी को शीतल छांव देते हैं ।
८. ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना रुप जिन मंदिर में चारों और घूमकर तीन प्रदक्षिणा देना ।
९. जुगनु वगैरह जीवों का शीत प्रकाश वह प्रभा है ।
१०. जिन मंदिर में पानी पीना चाहिये ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर हैं वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. अज्ञानता में अनंत भव बिगाड दिये हैं ।
२. हमारे आसपास की सभी जगह इन सूक्ष्म अेकेन्द्रिय जीवों से भरी हुई है ।
३. सत् का संग हमें सज्जन एंव संत बनाता है ।
४. इसमें धर्म का काल कितना ।
५. जीवन बगिया को स्वच्छ बनाकर खोज खोज के सुंदर गुणों के पौधे लगाने पडेगे ।
६. दयालु आत्माये खुद दुःख सहन करके भी औरों को सुखी करते हैं ।
७. चौदह स्वप्न सूचित प्रभु जेष्ठ सुदि बारस को जन्में ।
८. समय समय पर स्कंध के साथ दूसरे नये परमाणु जुडते रहते हैं ।
९. जिनेश्वर परमात्मा के दर्शन करने वाले श्रावकों को दस त्रिक अवश्य धारण करनी चाहिये ।
१०. इस आरे में जन्मा हुआ कोई भी मनुष्य इस काल में मोक्ष में नहीं जा सकता ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. दुषम दुषम नाम का छठवाँ आरा २) श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु की संक्षिप्त जीवन यात्रा ३) लज्जा गुण
४. जिन मंदिर की मुख्य आशातनायें ५) पुद्गल के लक्षण बताकर शब्द लक्षण समझाओ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,